



SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

पुनरुत्थित प्रभु — स्ट्रॉन्स नंबरों के साथ एक KJV बाइबल अध्ययन

कूस, प्रमाण, और वापसी — मृत्यु ऐसी ही क्यों होनी थी, और आगे क्या होगा

मौलिक बाइबिल सिद्धांत — यीशु मसीह का सुसमाचार

उद्घाटन शब्द

यीशु को क्यों मरना पड़ा? खाली कब्र ने क्या सिद्ध किया? जब वह लौटकर आएगा तब क्या होगा? यह अध्ययन इन तीन प्रश्नों को बाइबल के सामने रखता है, और बाइबल को उसके अपने ही शब्दों में उनका उत्तर देने देता है।

यह अध्ययन इस बात को समझाता है कि लहू क्यों बहाया जाना पड़ा। यह अध्ययन इस बात को समझाता है कि वह कितना नीचे उतर आया, और कूस ने उसे क्या मूल्य चुकाया। यह अध्ययन इस बात को समझाता है कि पिता पुत्र को परमेश्वर और प्रभु कहकर पुकारता है। यह अध्ययन इस बात को समझाता है कि यहोवा ने दाऊद के प्रभु से क्या कहा। यह अध्ययन मरे हुए लोगों में से जी उठे मसीह को, और उन लोगों में जीवित मसीह को समझाता है जिन्हें उसने बचाया। यह अध्ययन उसके पुनरागमन को, और उस चुनाव को समझाता है जो सदा-सर्वदा के लिए बना रहता है।

इस अध्ययन में उत्तर दिए गए तीन प्रश्न:

1. यीशु की मृत्यु लोहू के द्वारा ही क्यों होनी चाहिए थी, और किसी सरल उपाय से क्यों नहीं?
2. भजन संहिता 110:1 में दाऊद अपने ही पुत्र को अपना प्रभु कैसे कह सका?
3. पुनरुत्थान ने क्या सिद्ध किया, और जब यीशु फिर आएगा तो क्या होगा?

खुलने वाला लंगर

1 तीमुथियुस 2:5 क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है, (6) जिसने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उसकी गवाही ठीक समयों पर दी जाए।

एक परमेश्वर + परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक मध्यस्थ, अर्थात् मनुष्य मसीह यीशु।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: एक मध्यस्थ (जो दो अलग हुए पक्षों के बीच खड़ा होकर उन दोनों पक्षों को फिर से एक साथ लाता है) को दोनों पक्षों से पूरी तरह संबंधित होना चाहिए, अन्यथा वह मध्यस्थ के रूप में सेवा नहीं कर सकता। देखें कि 1 तीमुथियुस 2:5 मध्यस्थ के विषय में क्या कहता है: "मनुष्य मसीह यीशु।" यीशु मसीह का मनुष्य होना अनिवार्य है, अन्यथा वह वहाँ खड़ा नहीं हो सकता जहाँ मनुष्य खड़े होते हैं और मानवीय मृत्यु नहीं मर सकता। देखें कि 2 कुरिन्थियों 5:19 उस मृत्यु के भीतर क्या सत्य होने की बात कहता है: "परमेश्वर मसीह में था।" यीशु मसीह का परमेश्वर होना अनिवार्य है, अन्यथा उसकी मृत्यु केवल एक और मनुष्य का मरना है, जो किसी के लिए भी उद्धार (पाप और पाप के दण्ड से छुटकारा) प्रदान नहीं करती। यही कारण है कि "यीशु कौन है" का उत्तर केवल विद्वानों के लिए एक गौण प्रश्न नहीं है। उद्धार का सम्पूर्ण सिद्धांत उस प्रश्न के उत्तर पर निर्भर करता है।)

H. मृत्यु ऐसी क्यों होनी थी — परमेश्वर के पास वापस जाने का पुल

H1. समस्या, स्पष्ट रूप से बताई गई

यशायाह 59:2 परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।

परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है।

रोमियों 3:23 इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं,

इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

H2. रक्त ही क्यों, कोई आसान वस्तु क्यों नहीं

इब्रानियों 9:22 और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती। (लैव्य. 17:11)

[G859 aphesis ■]

और बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती। (लैव्य. 17:11.)

लैव्यव्यवस्था 17:11 क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैंने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के लिए लहू ही से प्रायश्चित्त होता है। (इब्रा. 9:22)

क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है --> क्योंकि प्राण के लिए लहू ही से प्रायश्चित्त होता है। (इब्रा. 9:22.)

इब्रानियों 10:4 क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे।

क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: इन तीन पदों को एक साथ रखिए, और पूरी प्राचीन बलिदान प्रणाली स्वयं स्पष्ट हो जाती है। जीवन रक्त में है। पाप एक जीवन की कीमत माँगता है। प्राचीन समय में, पशु बलिदान सैकड़ों वर्षों तक, दिन-प्रतिदिन, प्रायश्चित्त (पाप के लिए एक अस्थायी आवरण जो व्यक्ति की परमेश्वर के सामने स्थिति को पुनःस्थापित करता था) प्रदान करते थे। इब्रानियों स्पष्ट रूप से कहता है कि पशु बलिदान पाप को कभी दूर नहीं कर सकते थे। तो फिर वे सभी पशु बलिदान किसलिए थे? पशु बलिदान पाप के ऋण को दृष्टिगत रूप से अदत्त बनाए रखते थे। पशु बलिदान एक दीर्घ, बारंबार, दैनिक स्मरण थे कि एक जीवन देय है। पशु बलिदान उस स्मरण को उस एक मृत्यु तक बनाए रखते थे जो पाप के ऋण को पूरी तरह चुका सकती थी।)

H3. वह कितना नीचे उतरा

फिलिपियों 2:5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; (6) जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। (7) वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। (8) और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

वह परमेश्वर के स्वरूप में था --> उसने दास का रूप धारण किया --> और मृत्यु तक, वरन् क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: फिलिपियों 2:6-8 में अवतरण के क्रम को देखें। यीशु परमेश्वर के स्वरूप में था। यीशु को ख्याति से रहित किया गया। यीशु ने सेवक का रूप धारण किया। यीशु ने मनुष्यों की समानता धारण की। यीशु नम्र बना। यीशु आज्ञाकारी बना। यीशु मरा। इसके बाद पौलुस ने दो और शब्द जोड़े जिनकी वाक्य को कठोरता से आवश्यकता नहीं थी: "यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु।" केवल यह कहना कि यीशु मरा, पौलुस के लिए पर्याप्त नहीं था। यीशु की मृत्यु का विशिष्ट ढंग पौलुस के तर्क का एक भाग है।)

H4. इसकी वास्तव में उसे क्या कीमत चुकानी पड़ी — पहले से कहा गया, और बाद में फिर कहा गया

यशायाह 50:6 मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और उनके थूकने से मैंने मुँह न छिपाया। (मत्ती 26:67, इब्रा. 12:2)

मैंने अपनी पीठ मारने वालों को दी --> मैंने अपना मुख लज्जा और थूकने से न छिपाया।

भजन संहिता 22:16 क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मण्डली मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है; वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। (मत्ती 27:35, मर. 15:29, लूका 23:33) (17) मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ; वे मुझे देखते और निहारते हैं; (18) वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं, और मेरे पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं। (मत्ती 27:35, लूका 23:34, यूह. 19:24,25)

उन्होंने मेरे हाथ और मेरे पांव छेदे हैं --> वे मेरे वस्त्र आपस में बाँट लेते हैं, और मेरे वस्त्र के लिये चिट्ठी डालते हैं।

मत्ती 27:35 तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया; और चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए।

उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, और चिट्ठी डालकर उसके वस्त्र बाँट लिए --> कि पूरा हो।

यूहन्ना 19:34 परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला।

एक भाले ने उसका पंजर बेधा --> और तुरन्त लोहू और जल बह निकला।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: दाऊद ने भजन संहिता 22 में छिदे हुए हाथों और पैरों के बारे में लिखा। दाऊद ने भजन संहिता 22 में सिपाहियों द्वारा वस्त्र बाँट जाने के बारे में लिखा। दाऊद ने यह इस्राएल में किसी के भी क्रूसीकरण देखने से एक हजार वर्ष पहले लिखा। दाऊद अपने साथ व्यक्तिगत रूप से घटी किसी घटना का वर्णन नहीं कर रहा था। मत्ती ने सदियों बाद, यीशु के क्रूसीकरण के घटित होने के पश्चात लिखा। मत्ती ने लिखा कि सिपाहियों ने ठीक वही किया जो भजन संहिता 22 में वर्णित था। मत्ती बताता है कि सिपाहियों

न ऐसा क्यों किया: "कि यह पूरा हो।" इन दोनों वृत्तांतों को साथ पढ़ें। दाऊद ने अपना वृत्तांत भावपूर्ण को और देखते हुए लिखा, बिना यह जान कि कूसीकरण घटित होगा। मत्ती ने अपना वृत्तांत कूसीकरण की ओर पीछे मुड़कर देखते हुए लिखा, बिना यह नकार कि कूसीकरण घटित हुआ।)

H5. मृत्यु किसलिए थी — एक सेतु, दुर्घटना नहीं

रोमियों 5:8 परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।

[G2644 katallasso ■] (9) तो जबकि हम, अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? (10) क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?

जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा --> हम उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से मेल किए गए।

2 कुरिन्थियों 5:18 और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। **[G2643 katallage ■]** (19) अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। (20) इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो। (इफि. 6:10, मला. 2:7) (21) जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

परमेश्वर मसीह में होकर जगत का अपने साथ मेल कर रहा था --> उसने उसे जो पाप से अनजान था, हमारे लिये पाप बनाया।

H6. खम्भे पर साँप — एक पुरानी तस्वीर जिसे उसने अपने ऊपर लागू किया

गिनती 21:8 यहोवा ने मूसा से कहा, "एक तेज विषवाले साँप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।" (9) अतः मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब साँप के डसे हुएों में से जिस-जिसने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया। (यूह. 3:14)

जो कोई डसा गया हो, जब वह उसे देखे, तब वह जीवित रहेगा।

भिन्न दृष्टिकोण, वही दृश्य — मरुभूमि में खम्भा, और पहाड़ी पर क्रूस

यूहन्ना 3:14 और जिस तरह से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए। (यूह. 8:28) (15) ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए। (16) "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (17) परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

जैसे मूसा ने जंगल में सर्प को ऊँचा किया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊँचा किया जाना अवश्य है --> जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: गिनती 21 और यूहन्ना 3 के बीच का यह संबंध इस अध्ययन की कोई कल्पना नहीं है। यीशु ने स्वयं अपनी पहचान के बारे में इस संबंध को सीधे और खुलकर बताया। जंगल में मरते हुए लोगों से यह नहीं कहा गया कि वे स्वयं को ठीक करें। जंगल में मरते हुए लोगों से यह नहीं कहा गया कि वे साहसी बनें। जंगल में मरते हुए लोगों से यह नहीं कहा गया कि वे चंगाई कमाएँ। जंगल में मरते हुए लोगों से कहा गया कि वे उस चीज़ को देखें जिसे परमेश्वर ने खम्भे पर ऊँचा किया था। जंगल में मरते हुए लोग जिन्होंने देखा, वे जीवित रहे। अब दोनों दृश्यों को एक साथ रखें और उस अनोखी बात पर ध्यान दें। खम्भे पर ऊँचा किया गया पीतल का साँप उसी वस्तु के आकार का था जो उन लोगों को मार रही थी जो उसे देखते थे। पौलुस क्रूस के बारे में ऐसी ही एक अनोखी सच्चाई बताता है। पौलुस कहता है कि यीशु को हमारे लिए पाप बनाया गया, यद्यपि यीशु पाप को नहीं जानता था (2 कुरिन्थियों 5:21)। उपचार उसी आकार में ऊँचा किया गया जिस आकार में शाप था।)

I. पिता स्वयं पुत्र को "परमेश्वर" और "प्रभु" कहते हैं

I1. इब्रानियों 1:1 पूर्व युग में परमेश्वर ने पूर्वजों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की, (2) पर इन अन्तिम दिनों में हम से अपने पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि भी रची है। (1 कुरि. 8:6, यूह. 1:3) (3) वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से सम्भालता है: वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने जा बैठा।

उसने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बात की + जिसके द्वारा उसने संसार भी बनाए --> जो उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है।

I2. इब्रानियों 1:5 क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, "तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है?" और फिर यह, "मैं उसका पिता होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा?" (2 शम्. 7:14, 1 इति. 17:13, भज. 2:7) **[G4416 prototokos ■]** (6) और जब पहलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, "परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।" (व्यव. 32:43, 1 पत. 3:22)

क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, "तू मेरा पुत्र है? --> व्यव. 32:43, 1 पत. 3:22.

(मेरे व्यक्तिगत विचार: इब्रानियों की पुस्तक का पूरा पहला अध्याय एक ही लंबा तर्क प्रस्तुत करता है। यह तर्क यह है कि पुत्र कोई स्वर्गदूत नहीं है और कभी स्वर्गदूत नहीं था। यह बात एक ऐसे अध्ययन में ध्यान देने योग्य है जिसने अभी-अभी "यहोवा के दूत" नामक व्यक्ति पर कई पृष्ठ व्यतीत किए हैं। इब्रानी शब्द मलाक एक कार्य को दर्शाता है। परमेश्वर के अपने पुत्र ने पुराने नियम में कई अवसरों पर वह कार्य पूरा किया। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक का लेखक किसी को भी पुत्र को सृजित स्वर्गदूतों में गिनने नहीं देगा। स्वर्गदूतों को पुत्र की आराधना करने के लिए कहा गया है।)

I3. इब्रानियों 1:8 परन्तु पुत्र के विषय में कहता है, “हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा, तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है। (9) तूने धार्मिकता से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण परमेश्वर, तेरे परमेश्वर, ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल से तेरा अभिषेक किया।” (भज. 45:7) (10) और यह कि, “हे प्रभु, आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। (भज. 102:25, उत्प. 1:1) (11) वे तो नाश हो जाएँगे; परन्तु तू बना रहेगा और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएँगे। (12) और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएँगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।” (इब्रा. 13:8, भज. 102:25,26)

पुत्र से वह कहता है, हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग है --> हे प्रभु, तूने आदि में पृथ्वी की नींव डाली।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: इब्रानियों 1:8 के पहले पाँच शब्दों को फिर से पढ़ें: “परन्तु पुत्र के विषय में वह कहता है।” यह वाक्य इब्रानियों की पुस्तक के लेखक की यीशु के बारे में राय नहीं है। यह वाक्य परमेश्वर पिता के पुत्र से सीधे बात करने को दर्ज करता है। परमेश्वर पिता पुत्र को “हे परमेश्वर” कहकर बुलाते हैं। परमेश्वर पिता फिर पुत्र को “प्रभु” कहकर बुलाते हैं। परमेश्वर पिता फिर पृथ्वी और आकाशों को बनाने का श्रेय पुत्र को देते हैं। यदि कोई व्यक्ति यह तर्क करना चाहता है कि पवित्रशास्त्र में पुत्र को कभी परमेश्वर नहीं कहा गया है, तो उस व्यक्ति को इस पद को संबोधित करना होगा, जहाँ पिता पुत्र को परमेश्वर कहते हैं।)

अलग दृष्टिकोण, एक ही दृश्य — एक राजा के लिए लिखा गया गीत, और पिता का अपने पुत्र को उसका हवाला देना

भजन संहिता 45:6 हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा; तेरा राजदण्ड न्याय का है। (7) तूने धार्मिकता से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है। इस कारण परमेश्वर ने हाँ, तेरे परमेश्वर ने तुझको तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है। (इब्रा. 1:8,9)

हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा --> तेरे परमेश्वर ने तुझको तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है। (इब्रा. 1:8,9.

भजन संहिता 102:25 आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है। (26) वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह मिट जाएगा; (27) परन्तु तू वहीं है, और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।

आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली --> परन्तु तू वहीं है, और तेरे वर्षों का अन्त न होगा.

(मेरे व्यक्तिगत विचार: यह एक ऐसा स्थान है जहाँ दो अंशों को साथ-साथ पढ़ना वास्तव में काम करता है। भजन संहिता 45 एक विवाह गीत है। भजन संहिता 102 एक संकट में पड़े व्यक्ति की प्रार्थना है। भजन संहिता 102 में, ये शब्द यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, जिसने संसार को बनाया, को संबोधित किए गए हैं। दोनों भजन बेतलेहेम में यीशु के जन्म से सदियों पहले लिखे गए थे। इब्रानियों 1 दोनों भजनों को उद्धृत करता है। इब्रानियों 1 दोनों भजनों को परमेश्वर पिता के वचनों के रूप में प्रस्तुत करता है। इब्रानियों 1 दोनों भजनों को पुत्र पर लागू करता है। मूल भजनों और इब्रानियों 1 में दिए गए उद्धरणों के बीच शब्दों में छोटे-छोटे अंतरों पर ध्यान दें। बाइबल इन छोटे अंतरों को नहीं छिपाती, और यह अध्ययन भी उन्हें नहीं छिपाता। भजनों और इब्रानियों 1 के बीच जो नहीं बदलता, वह है उस व्यक्ति की पहचान जिसके बारे में ये शब्द कहे गए हैं।)

J. यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा — वह वचन जिसने तर्क को समाप्त कर दिया

J1. भजन संहिता 110:1 मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, “तू मेरे दाहिने ओर बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।” (इब्रा. 10:12,13, लूका 20:42,43) [H113 adown ■] [H3068 Yehovah ■] (2) तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर।

यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, तू मेरे दाहिने हाथ बैठ --> जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पावदान न बना दूँ।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: भजन संहिता 110:1 की यह एक पंक्ति पहली नज़र में जितना अर्थ दिखाती है, उससे कहीं अधिक अर्थ रखती है। अंग्रेज़ी में, दोनों शब्द “Lord” के रूप में छापे गए हैं। अंतर की एकमात्र कुंजी अक्षरों का बड़ा होना है। पहला शब्द बड़े अक्षरों में छपा गया है, LORD। दूसरा शब्द बड़े अक्षरों में नहीं छपा गया है। अंग्रेज़ी के नीचे, ये दो अलग-अलग हिब्रू शब्द हैं। पहला हिब्रू शब्द परमेश्वर का वाचा-नाम है, यहोवा (H3068)। KJV में बड़े अक्षरों का अर्थ हमेशा यह होता है कि मूल हिब्रू शब्द यहोवा है। दूसरा हिब्रू शब्द है अदोन (H113), जो स्वामी या शासक के लिए एक शब्द है। यहाँ प्रयुक्त अदोन का रूप “मेरे प्रभु” पढ़ा जाता है। यह भजन लिखते हुए दाऊद यह अभिलेख करता है कि परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा है जिसे दाऊद अपना स्वयं का स्वामी कहता है। अब इस सीधे प्रश्न पर विचार करें। दाऊद इस्राएल का राजा था। उसका स्वामी कौन था? यह उत्तर और भी अजीब हो जाता है जब आप याद करते हैं कि परमेश्वर ने वादा किया था कि मसीह पीढ़ियों बाद दाऊद के अपने ही परिवार में से आएगा। कोई व्यक्ति सामान्यतः अपने ही परपोते को “मेरे प्रभु” नहीं कहता।)

J2. उसने स्वयं उनसे इसके बारे में पूछा, और कोई भी उत्तर न दे सका

मत्ती 22:41 जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने उनसे पूछा, (42) “मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किसकी सन्तान है?” उन्होंने उससे कहा, “दाऊद की।” (43) उसने उनसे पूछा, “तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है?” (44) “प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की चौकी न कर दूँ।” (45) भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?” (46) उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका। परन्तु उस दिन से किसी को फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ।

जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा? --> उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका.

(मेरे व्यक्तिगत विचार: मत्ती 22:41-46 में यीशु ने फरीसियों को अपने ही प्रश्न का उत्तर नहीं बताया। यीशु ने प्रश्न पूछा और प्रश्न को अनुत्तरित छोड़ दिया। यह प्रश्न अब भी अनुत्तरित है, और इस प्रश्न का अब भी केवल एक ही उत्तर है जो उपयुक्त बैठता है। मसीह शरीर के अनुसार दाऊद का पुत्र है। मसीह उस बात के अनुसार जो वह दाऊद के जन्म लेने से पहले था, दाऊद का प्रभु है।)

J3. पतरस ने उसी वचन को उस दिन इस्तेमाल किया जिस दिन कलीसिया का आरंभ हुआ

प्रेरितों के काम 2:32 “इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। (33) इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उण्डेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। (34) क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर

नहीं चढ़ा; परन्तु वह स्वयं कहता है, 'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ, (35) जब तक कि मैं तेरे बोरियों को तेरे पोंवों तले को चौको न कर दूँ।' (भज. 110:1) (36) "अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।"

परन्तु वह स्वयं कहता है --> 1) "अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।"

(मेरे व्यक्तिगत विचार: प्रेरितों के काम 2:29-36 में पतरस का तर्क छोटा है। पतरस के तर्क को किसी चतुराई की आवश्यकता नहीं है। दाऊद ने किसी के परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठने के विषय में लिखा। दाऊद कभी ऊपर जाकर परमेश्वर के दाहिने हाथ नहीं बैठा। एक व्यक्ति जाकर दाऊद की कब्र देख सकता है, पतरस कुछ आयतों पहले यह कहता है। इस कारण वह भजन दाऊद के विषय में नहीं था। पतरस फिर उस व्यक्ति का नाम बताता है जिसके विषय में वह भजन था। पतरस इस व्यक्ति का नाम बिना किसी नरमी के लेता है: "उसी यीशु को, जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया।" पतरस इस व्यक्ति को "प्रभु और मसीह दोनों" कहता है।)

ज4. वही भजन एक बात और कहता है — और इब्रानियों उस पर पूरा तर्क खड़ा करता है

भजन संहिता 110:4 यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, "तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है।" (इब्रा. 7:21, इब्रा. 7:17)

यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा --> तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है।" (इब्रा. 7:21, इब्रा. 7:17.)

इब्रानियों 5:5 वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की महिमा अपने आप से नहीं ली, पर उसको उसी ने दी, जिसने उससे कहा था, "तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।" (भज. 2:7) (6) इसी प्रकार वह दूसरी जगह में भी कहता है, "तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये याजक है।"

वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की महिमा अपने आप से नहीं ली --> तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये याजक है.

इब्रानियों 7:3 जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है, जिसके न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरकर वह सदा के लिए याजक बना रहता है।

न दिनों का आरंभ, न जीवन का अंत --> निरंतर याजक बना रहता है।

इब्रानियों 7:24 पर यह युगानुयुग रहता है; इस कारण उसका याजकपद अटल है। (25) इसलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है। (1 यूह. 2:1,2, 1 तीमु. 2:5)

वह सदा बना रहता है + उसके पास एक अटल याजकपद है --> वह उन्हें सम्पूर्ण रूप से बचाने में सक्षम है।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: एक छोटे भजन में बहुत कुछ समाया हुआ है। भजन 110 किसी ऐसे व्यक्ति का नाम लेता है जिसे दाऊद अपना प्रभु कहता है, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है। भजन 110 सिंघोन से राज्य करने वाले एक राजा का नाम लेता है। भजन 110 सदा के लिए एक याजक का नाम लेता है, जो इस्राएल के याजकपद से भी पुरानी एक व्यवस्था का है, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने शपथ खाकर की है, जिसे परमेश्वर वापस नहीं लेगा। प्राचीन इस्राएल में, व्यवस्था राजा के पद और याजक के पद को अलग-अलग रखती थी। उस व्यवस्था के अंतर्गत किसी व्यक्ति को दोनों पद रखने की अनुमति नहीं थी। भजन 110 दोनों पद एक ही व्यक्ति को देता है। इब्रानियों की पुस्तक कई अध्याय इस बात को समझाने में लगाती है कि वह व्यक्ति कौन है।)

K. कब्र से जी उठाया गया — और तुझ में जीवित

K1. स्वयं तथ्य, और यह कैसे सौंपा गया

1 कुरिन्थियों 15:3 इसी कारण मैंने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी, कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। (4) और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। (होशे 6:2)

मसीह हमारे पापों के लिये पवित्रशास्त्र के अनुसार मरा + वह गाड़ा गया + तीसरे दिन जी उठा।

1 कुरिन्थियों 15:20 परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें पहला फल हुआ।

मसीह मरे हुएों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें पहला फल बना है।

K2. पुनरुत्थान ने उसके बारे में क्या सिद्ध किया

रोमियों 1:3 अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। (4) और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुएों में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।

शरीर के भाव से दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ --> मरे हुएों में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहराया गया।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: पौलुस रोमियों 1:3-4 में फिर से उत्तर के दोनों भागों को क्रम में एक ही वाक्य में रखता है। यीशु शरीर के अनुसार दाऊद के घराने से आया। यीशु मरे हुएों में से जी उठकर सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र होने का दावा कर सकता है। केवल यीशु का ही यह दावा मरे हुएों में से जी उठकर सिद्ध हुआ है।)

K3. पुराने नियम ने इसे पहले कहा

भजन संहिता 16:10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को कब्र में सड़ने देगा। (11) तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूर है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है। (प्रेरि. 2:25-28)

तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा --> और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा।

प्रेरितों के काम 2:29 “हे भाइयों, मैं उस कुलपांते दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ वर्तमान है। (1 राजा. 2:10) (30) वह भविष्यद्वक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने उससे शपथ खाई है, मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा। (2 शमू. 7:12,13, भज. 132:11) (31) उसने होनेवाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की, कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई। (भज. 16:10)

दाऊद मर भी गया और गाड़ा भी गया --> उसने यह पहिले से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में कहा।

K4. और अब — वह उन लोगों में जीवित है जिन्हें उसने बचाया

रोमियों 8:11 और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुआओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

जिसने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया, उसका आत्मा तुम में वास करे --> वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी जीवित करेगा।

गलातियों 2:20 मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आपको दे दिया।

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ --> अब मैं नहीं, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है।

कुलुस्सियों 1:27 जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। **[G3466 musterion ■]**

यह भेद = तुम में मसीह, महिमा की आशा।

यूहन्ना 14:23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे।

यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा --> और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: इस अध्ययन की पूरी कड़ी को उसके निष्कर्ष तक पालन करें। यीशु पिता के साथ तब से था जब कुछ भी नहीं बनाया गया था। यीशु पुराने नियम में मनुष्यों को दिखाई दिए, और वे मनुष्य जीवित रहे। यीशु एक छोटे नगर में एक स्त्री से जन्मे। यीशु को एक पहाड़ी पर, लकड़ी पर, नगर के बाहर मार डाला गया। यीशु कब्र से बाहर आए। बाइबल अब कहती है कि यीशु लोगों के भीतर रहते हैं। यह निष्कर्ष वही है जिस ओर यह अध्ययन आरंभ से ही बढ़ रहा था। इस अध्ययन का उद्देश्य कभी भी यह तर्क जीतना नहीं था कि यीशु कौन है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह है कि जो यह सब कुछ है, वह तुम्हारे भीतर रहना चाहता है। यूहन्ना 14:23 पर भी ध्यान दें: “हम आएँगे।” वही बहुवचन स्वर जिसने उत्पत्ति 1:26 में बाइबल को खोला था, यहाँ भी उपस्थित है।)

L. वह फिर आ रहा है — और वह चुनाव जो सदा के लिए रहता है

L1. वह आ रहा है, और हर आँख उसे देखेगी

प्रेरितों के काम 1:9 यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। (भज. 47:5) (10) और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तब देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए। (11) और कहने लगे, “हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।” (1 थिस्स. 4:16)

जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।” (1 थिस्स. 4:16.)

प्रकाशितवाक्य 1:7 देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है; और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हाँ। आमीन। (जक. 12:10)

हर एक आंख उसे देखेगी + और वे भी जिन्होंने उसे बेधा।

L2. 2 थिस्सलुनीकियों 1:7 और तुम जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। (यहू. 1:14,15, प्रका. 14:13) **[G1557 ekdikesis ■]** (8) और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। (भज. 79:6, यशा. 66:15, यिर्म. 10:25) (9) वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। (प्रका. 21:8, मत्ती 25:41,46, यशा. 2:19,21) (10) यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया। (1 थिस्स. 2:13, 1 कुरि. 1:6, भज. 89:7, यशा. 49:3)

धधकती आग में उन पर बदला लेते हुए जो परमेश्वर को नहीं जानते, और जो सुसमाचार को नहीं मानते --> जब वह अपने संतों में महिमावान होने के लिए आएगा।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: 2 थिस्सलुनीकियों 1:8 को धीरे-धीरे पढ़िए। 2 थिस्सलुनीकियों 1:8 दो समूहों के नाम लेता है, एक समूह के नहीं। पहला समूह परमेश्वर को नहीं जानता। दूसरा समूह सुसमाचार का पालन नहीं करता। जानना और पालन करना एक ही पद में एक साथ नाम लिए गए हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 1:10 पर भी ध्यान दें, जो उसी वाक्य का भाग है। यीशु का वही आगमन जो एक समूह के लिए आग है, वही दूसरे समूह के लिए महिमा है। यह एक ही घटना है। उस घटना में व्यक्ति किस पक्ष में है, यह अभी तय होता है, बाद में नहीं।)

L3. प्रकाशितवाक्य 19:11 फेर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धार्मिकता के साथ न्याय और लड़ाई करता है। (भज. 96:13) (12) उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं, और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। और उसका एक नाम उस पर लिखा हुआ है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। (प्रका. 19:16) (13) वह लहू में डुबोया हुआ वस्त्र पहने है, और उसका नाम 'परमेश्वर का वचन' है।

जो उस पर बैठा हुआ था वह विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है --> उसका नाम परमेश्वर का वचन कहलाता है।

प्रकाशितवाक्य 19:16 और उसके वस्त्र और जाँघ पर यह नाम लिखा है: “राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।” (1 तीमु. 6:15)

राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: प्रकाशितवाक्य 19:12 में एक छोटी सी पंक्ति पर ध्यान दीजिए। यीशु का एक नाम लिखा हुआ था जिसे कोई मनुष्य नहीं जानता था, केवल वे स्वयं ही उस नाम को जानते थे। जो नाम इस अध्ययन को दिए गए हैं, वे उसी अंश में मिलते हैं। वे नाम हैं विश्वासयोग्य और सच्चा। परमेश्वर का वचन। राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु।)

L4. पुस्तकें खोली गईं

प्रकाशितवाक्य 20:11 फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। (मत्ती 25:31, भज. 47:8) (12) फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुएों को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुएों का न्याय किया गया। (दानि. 7:10) (13) और समुद्र ने उन मरे हुएों को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुएों को जो उनमें थे दे दिया; और उनमें से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। (14) और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। (15) और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया। (यूह. 3:36, 1 यूह. 5:11,12)

पुस्तकें खोली गईं + एक और पुस्तक खोली गई, जो जीवन की पुस्तक है --> जो कोई जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

(मेरे व्यक्तिगत विचार: प्रकाशितवाक्य 20:12 में सिंहासन के सामने दो प्रकार की पुस्तकें दिखाई देती हैं। एक प्रकार की पुस्तक में यह दर्ज होता है कि लोगों ने क्या किया। दूसरे प्रकार की पुस्तक में नाम दर्ज होते हैं, जिसे जीवन की पुस्तक कहा जाता है। प्रकाशितवाक्य 20:12 यह नहीं कहता कि किसी को कर्मों की पुस्तकों में लिखी बातों के कारण बचाया गया। प्रकाशितवाक्य 20:15 कहता है कि परिणाम तय करने वाली एक ही बात थी—क्या किसी व्यक्ति का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा था।)

L5. वह चुनाव, जितनी स्पष्टता से बाइबल कभी कुछ कहती है उतनी स्पष्टता से कहा गया

यूहन्ना 3:18 जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जा चुका है; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। (यूह. 5:10)

जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है।

यूहन्ना 3:36 जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।”

जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है.

रोमियों 6:23 क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है --> परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है.

(मेरे व्यक्तिगत विचार: रोमियों 6:23 इस पूरे अध्ययन का केंद्रीय पद है। रोमियों 6:23 एक छोटा वाक्य है जिसके दो भाग हैं। पाप का एक भुगतान देना पड़ता है, और वह भुगतान मृत्यु है। वह भुगतान दो तरीकों में से एक तरीके से किया जाता है। या तो व्यक्ति स्वयं वह भुगतान सदा के लिए करता है, या व्यक्ति उसे उपहार के रूप में ले लेता है जो यीशु पहले ही चुका चुके हैं। यही संपूर्ण चुनाव है। कोई भी इस चुनाव को करने से बच नहीं सकता, क्योंकि न चुनाव पहले तरीके को चुनने के समान ही है। इस अध्ययन में सब कुछ, उत्पत्ति 1:26 में "हम मनुष्य बनाएं" से लेकर प्रकाशितवाक्य 20 में सिंहासन तक, उसी एक निर्णय की ओर निर्मित होता रहा है। वह निर्णय लेने के लिए अभी भी समय है। यीशु अभी भी बुला रहे हैं।)

L6. प्रेरितों के काम 4:12 और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके।”

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं --> क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके.

समापन

प्रकाशितवाक्य 22:17 और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं, “आ!” और सुननेवाला भी कहे, “आ!” और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंट-मेंत ले। (यशा. 55:1)

और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं --> वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंट-मेंत ले। (यशा. 55:1.

यूहन्ना 3:17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे --> परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए.

(मरे व्याक्तेगत विचार: बाइबल में आंतेम निमंत्रण का कोई मूल्य नहीं है। बाइबल में आंतेम निमंत्रण किसी को भी दिया जाता है। जो शब्द प्रयोग किया गया है वह है "जो कोई।" शब्द "जो कोई" जानबूझकर किसी को भी बाहर नहीं छोड़ता। इसमें इस अध्ययन को पढ़ने वाला सबसे बुरा व्यक्ति भी शामिल है। इसमें वह व्यक्ति भी शामिल है जो वर्षों से पहले ही ना कह चुका है। यीशु, जो यह सब कुछ है, वही है जो कह रहा है आओ। व्यक्ति को बस आना है और जीवन का जल लेना है।)

अभ्यास प्रश्नोत्तरी

1. इब्रानियों 9:22 — और व्यवस्था के अनुसार लगभग सब वस्तुएं लोहू ही से पाक होती हैं:
 - a) क्योंकि शरीर का जीवन उसके रक्त में है
 - b) और लहू बहाए बिना क्षमा नहीं होती
 - c) क्योंकि लोहू ही प्राण के लिये प्रायश्चित्त करता है
2. रोमियों 5:8 — परन्तु परमेश्वर ने हम पर अपने प्रेम को यों प्रगट किया, कि जब हम पापी ही थे:
 - a) हम उसके द्वारा क्रोध से बचाए जाएंगे
 - b) हम उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से मिला दिए गए
 - c) मसीह हमारे लिए मरा
3. इब्रानियों 1:8 — परन्तु पुत्र के विषय में वह कहता है, हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग है:
 - a) धार्मिकता का राजदंड तेरे राज्य का राजदंड है
 - b) तेरे राज्य का राजदण्ड सीधा राजदण्ड है
 - c) और उसके कंधे पर प्रभुता होगी
4. भजन संहिता 110:1 — यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, तू मेरी दाहिनी ओर बैठ:
 - a) जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं
 - b) अपने शत्रुओं के बीच में राज्य कर
 - c) जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों की चौकी न बना दूं
5. 1 कुरिन्थियों 15:20 — परन्तु अब मसीह मरे हुआओं में से जी उठा है:
 - a) और सोए हुआओं में पहला फल बना
 - b) और कि वह पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन फिर जी उठा
 - c) और न ही तू अपने पवित्र जन को सड़ने देगा
6. प्रकाशितवाक्य 1:7 — देखो, वह बादलों के साथ आता है:
 - a) और एक बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया
 - b) और उसे हर एक आँख देखेगी
 - c) और उन सब में जो विश्वास करते हैं, उसकी प्रशंसा हो
7. 2 थिस्सलुनीकियों 1:9 — जिन्हें प्रभु के सामने से अनन्त विनाश का दण्ड मिलेगा:
 - a) और उसकी सामर्थ्य की महिमा से
 - b) जो दूसरी मृत्यु है
 - c) और उसके प्रताप की महिमा के लिये

उत्तर कुंजी: 1-b, 2-c, 3-a, 4-c, 5-a, 6-b, 7-a

यह अध्ययन कैसे शाखाओं में विभाजित होता है

--> शब्दों का महत्व कैसे है: एक अंग्रेजी शब्द "LORD" भजन संहिता 110:1 में दो भिन्न हिब्रू शब्दों को दर्शाता है। वे दो हिब्रू शब्द हैं यहोवा (H3068) और अदोन (H1113)। मत्ती 22:45 में यीशु द्वारा दिया गया संपूर्ण तर्क इसी अंतर पर आधारित है।

--> यह आप पर कैसे लागू होता है: यीशु केवल वही नहीं है जो आया। यीशु केवल वही नहीं है जो आने वाला है। यीशु वही है जो अभी आप में रहना चाहता है (कुलुस्सियों 1:27, गलातियों 2:20)।

--> अनंतकाल के लिए इसका क्या अर्थ है: पाप की मजदूरी मृत्यु है। परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है (रोमियों 6:23)। ये ही दो एकमात्र तरीके हैं जिनसे कोई व्यक्ति कभी पाप का ऋण चुकाता है।

--> अलग विषय: भजन संहिता 110:4 और इब्रानियों की पुस्तक अध्याय 7, मलिकिसिदक के याजकपद की संपूर्ण शिक्षा को खोलते हैं। यह शिक्षा एक राजा और एक याजक को एक ही व्यक्ति में संयुक्त बताती है, जो व्यवस्था से भी पुराना है, और परमेश्वर की उस शपथ से बंधा है जिसे वह वापस नहीं लेगा। यह शिक्षा अपने आप में एक पूर्ण अध्ययन के योग्य है।

--> पथांतर विषय: 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10 और प्रकाशितवाक्य 19:11-16 यीशु के पुनरागमन के संपूर्ण सिद्धांत की ओर खुलते हैं। इस सिद्धांत में यीशु के पुनरागमन की निश्चितता, यीशु के पुनरागमन की अचानकता, और यीशु के पुनरागमन के लिए जागते रहने की आज्ञा सम्मिलित है। स्पष्ट रूप से कहो: पवित्रशास्त्र यीशु के पुनरागमन की निश्चितता को बताता है और यीशु के पुनरागमन का समय-सारणी बताने से इनकार करता है (मत्ती 24:36, प्रेरितों के काम 1:7)। यह सेवकाई भी यीशु के पुनरागमन की समय-सारणी बताने से इनकार करती है।

एक खुला आमंत्रण — तुम जो भी हो, पढ़ते रहो

इस अध्ययन को पढ़ने के लिए आपका ईसाई होना ज़रूरी नहीं है। बहुत सी बातें आपको यहाँ तक लेकर आई हो सकती हैं। एक खोज आपको यहाँ ले आई हो सकती है। एक तर्क-वितर्क आपको यहाँ ले आया हो सकता है। एक सवाल जिसे आप वर्षों से अपने भीतर लिए फिर रहे हैं, वह आपको यहाँ ले आया हो सकता है। किसी और के विश्वास के बारे में जिज्ञासा आपको यहाँ ले आई हो सकती है। इस वेबसाइट पर सब कुछ आपका है, मुफ्त में, आपकी अपनी भाषा में। हम कभी आपका नाम नहीं पूछते। हम कभी आपका देश नहीं पूछते। हम कभी नहीं पूछते कि आप क्या मानते हैं। एक अध्ययन यीशु का पूरा वर्णन नहीं कर सकता। हमने इस प्रश्न में अपनी पूरी शक्ति लगा दी, और फिर भी यह अध्ययन बाइबल से होकर केवल एक ही मार्ग पर चला। यीशु आरंभ से पहले विद्यमान थे। यीशु अभी विद्यमान हैं। यीशु फिर से आने वाले हैं। कोई भी एक पृष्ठ उस सब का वर्णन पूरा नहीं कर सकता। और अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। दया पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। बुद्धि पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। ज्ञान पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। धैर्य पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। भक्ति पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। और अध्ययन आने वाले हैं। इन अध्ययनों को आप जिस भी क्रम में चाहें, पढ़ें। चलते-चलते हमारे स्रोतों की जाँच करें। इन अध्ययनों में हर आयत जानबूझकर पूरी छापी गई है। आपको हमारी बात पर कभी भरोसा करने की ज़रूरत नहीं है। आप स्वयं हर आयत को तौल सकते हैं।

इसके बाद एक और आमंत्रण आता है। हम यह दिखावा नहीं करेंगे कि वह आमंत्रण छिपा हुआ है। वह आमंत्रण उस अध्ययन का है कि उद्धार पाने के लिए एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए। यदि आप अभी उसे पढ़ना चाहते हैं तो अभी वह अध्ययन पढ़ें। यदि आप पहले कुछ और पढ़ना चाहते हैं तो पहले कुछ और पढ़ें। कोई गिनती नहीं कर रहा है। द्वार दोनों ही स्थितियों में खुला रहता है। पौलुस ने नीचे दिए गए शब्द एक ऐसे नगर में कहे जो ऐसे देवताओं की वेदियों से भरा हुआ था जो उसके अपने परमेश्वर नहीं थे। पौलुस ने ये शब्द उन लोगों से कहे जिन्होंने पौलुस से उस नगर में आने का अनुरोध नहीं किया था।

प्रेरितों के काम 17:26 उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास के सीमाओं को इसलिए बाँधा है, (व्यव. 32:8) (27) कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, और शायद वे उसके पास पहुँच सकें, और वास्तव में, वह हम में से किसी से दूर नहीं हैं। (यशा. 55:6, यिर्म. 23:23)

उस ने एक ही रक्त से मनुष्यों की सारी जातियाँ बनाई --> कि वे प्रभु को ढूँढ़ें, और उसे पाएं + वह हम में से किसी से दूर नहीं है।

ग्रीक मुख्य शब्द

“मेल-मिलाप” — **G2644 katallasso** — शत्रुता से मित्रता में बदलना; अनुग्रह में वापस लाना

काटाल्लासो एक ही शब्द में क्रूस के पूरे कारण को बताता है।

“मेल-मिलाप” — **G2643 katallage** — अनुग्रह की पुनर्स्थापना; अलग हुए दो पक्षों का पुनर्मिलन

कटल्लगे उसी मूल से आया है जिससे ऊपर दिया गया कटल्लस्सो आया है। कटल्लस्सो मेल-मिलाप के कार्य को नाम देता है (दो अलग हुए व्यक्तियों के बीच मित्रता की पुनर्स्थापना)। कटल्लगे उस मेल-मिलाप के परिणाम को नाम देता है।

“क्षमा” — **G859 aphesis** — दूर भेज देना; छुटकारा; मुक्त कर देना; क्षमा

लहू बहाए बिना पाप की क्षमा नहीं होती।

“रहस्य” — **G3466 musterion** — एक रहस्य; कुछ जो पहले छिपा था और अब बताया गया

बाइबल में, रहस्य कभी सुलझाने की पहेली नहीं होता। बाइबल में रहस्य वह भेद है जिसे परमेश्वर ने बताने का निश्चय किया।

“प्रतिशोध” — **G1557 ekdikesis** — जो न्याय से निकलता है; अन्याय का पूर्ण निवारण

एक्डिकेसिस वह शब्द है जो 2 थिस्सलुनीकियों 1:8 में प्रयोग हुआ है। एक्डिकेसिस का अर्थ अनियंत्रित क्रोध नहीं है। एक्डिकेसिस का अर्थ है न्याय का पूर्ण रूप से किया जाना।

“पहलौठा” — **G4416 prototokos** — पहलौठा; पहले उत्पन्न हुआ

पिता पुत्र के विषय में कहता है, “परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।”

हिब्रू मुख्य शब्द

“यहोवा” — **H3068 Yehovah** — परमेश्वर का वाचा का नाम, जो केजेवी में बड़े अक्षरों में यहोवा लिखा गया है

पुराने नियम में जहाँ भी बड़े अक्षरों में *LORD* शब्द आता है, वहाँ अंग्रेजी शब्द *LORD* के नीचे इब्रानी नाम यहोवा छेपा है।

“प्रभु” — **H113 adown** — स्वामी; प्रभु; मालिक; राज करने वाला

भजन संहिता 110:1 में, अदोन का रूप "मेरे प्रभु" पढ़ा जाता है। अदोन, यहोवा से एक भिन्न इब्रानी शब्द है - यहोवा वह प्रभु है जो उस पद में दाऊद के प्रभु से बोल रहा है।

SOURCES & CREDITS

Scripture: Hindi Indian Revised Version Bible (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.

Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEP Bible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEP Bible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0);

Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).